जीने के 18 रहस्य चैप्टर्स

एस. पी. भारिल्ल

Invincible Publishers

First published in India in 2019

©2019 Invincible Publishers, All Rights Reserved

ISBN : 978-93-88333-53-5

Invincible Publishers

201, SAS Tower, Sector 38, Gurgaon-122003

Registered Address: Opposite Kasturba Ashram,
Radaur, Haryana–135133

Printed at Thomson Press (India) LTD

No part of this publication may be reproduced or stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the publishers.

समर्पण

आपको

अपनों से अपनी बात...

'18 चैप्टर्स' में 19 चैप्टर्स हैं, पर आपको 18वाँ चैप्टर पढ़ने के बाद ही 19वाँ चैप्टर पढ़ना हैं। मैं जानता हूँ आप अपनी उत्सुकता को रोक नहीं पायेंगे और उसे अभी देखेंगे। फिर भी मेरा आपसे आग्रह है उसे पहले न पढ़े, 18वें चैप्टर के बाद ही पढ़े।

19वें चैप्टर के बाद यदि आपको लगे कि '18 चैप्टर्स' आपकी जिन्दगी के किसी कोने को छूते हुये निकल गयी है तो sp@spbharill.com पर लिखें। जिससे न जाने आप कितने अनजान लोगों की खुशहाली का कारण बन सकेंगे और आप और हम मिलकर इस मिशन को पूरा कर सकेंगे।

मेरे अभिन्न मित्रों की चाहत व मेरी पत्नी संध्या, बच्चे सर्वज्ञ और सर्वदर्शी की सतत् प्रेरणा ही नहीं बल्कि इस काम को करने के लिये लगातार प्रेशर भी बना रहा, साथ ही सहयोग भी कम नहीं रहा। मेरे पिता पंडित रतनचंद जी भारिल्ल जो कि एक आध्यात्मिक प्रवक्ता एवं लेखक हैं एवं माँ कमला भारिल्ल जो कि एक विदुषी हैं, जिनके अनवरत संस्कार एवं आशीर्वाद के कारण ही यह कार्य संपन्न हो सका। इस पुस्तक को इस मुकाम तक पहुँचाने के लिए मेरे जिन मित्रों ने सहयोग किया है, मैं उनके प्रति हृदय से आभारी हूँ।

इस पुस्तक की रॉयल्टी का 1 ₹ प्रति पुस्तक 'विनिंग टीम फाउन्डेशन' को जो कि अनाथ बच्चों के उत्थान के लिये कार्य करती है एवं 1 ₹ प्रति पुस्तक 'पीपल फॉर एनीमल लिबरेशन' (पाल) को, जो मूक पशुओं के अधिकारों के लिए कार्य करती है, को दिया जायेगा।

शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल

क्या-क्या नहीं सुना था ललिता ने अपने मोहल्ले की औरतों और रिश्तेदारों से, पर बेचारी! क्या करती। कोई मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, साधु, संत, पंडे, मौलवी नहीं छोड़े थे, जहाँ ललिता और विजय नहीं गये हों, वहाँ का प्रसाद और भभूती न ली हो। संतान नहीं होने का दर्द तो वही जान सकता है, जिसके संतान नहीं होती है। वे कोई चौखट पूजना नहीं छोड़ते, यह बात सभी जानते हैं, फिर भी बोलने से कौन चूकता है।

कोई कहता बाँझ है तो कोई कहता मनहूस है। अब तो सबने उम्मीद ही छोड़ दी थी, पन्द्रह साल शादी को जो हो गये थे। सास के तो कान ही पक गये थे, बहू की सूनी कोख के बारे में सुनते-सुनते! मन तो उसका भी बहुत व्याकुल था, पर ललिता की सास समझदार थी। जो भी मोहल्ले में सुनकर आती, अपनी बहू से न कहती।

अचानक ललिता को उल्टी होने लगी, जी मचलाने लगा। सारे भागे-भागे भगवान का नाम लेकर डॉक्टर के पास गये तो वहीं उछल पड़े। वर्षों की तमन्नाओं ने साकार रूप ले लिया, आज आशा पूरी हो गई, न जाने कितने वर्षों से सपने संजोये थे आज के दिन के लिए। खुशियों

का अम्बार फट पड़ा। पन्द्रह साल से माँ की सूनी गोद भर गई थी। यह खुशी ऐसे ही नहीं मिल गई, इसके लिए न जाने कितने पापड़ बेलने पड़े थे।

मिडिल क्लास ललिता और विजय बहुत सज्जन हैं। सीधे भी बहुत हैं, सरल हैं, समाज में प्रतिष्ठा भी है। आज वे बहुत खुश हैं। खुश क्यों न हों? 15 वर्ष के इन्तज़ार के बाद मुराद जो पूरी हो रही है। इतने इंतज़ार के बाद कोई नया मेहमान घर में आये तो क्या अमीर, क्या गरीब, सभी को खुशी बराबर होती है, पर खुशी का इज़हार करने में फ़र्क ज़रूर होता है।

ललिता के नौ महीने बड़े सँभलकर निकले थे। कहीं पैर गलत न पड़ जाये, कहीं गलत तरीके से बैठ न जाये, क्या खाना, क्या नहीं खाना, इस सब का ख्याल उसकी सास और मोहल्ले की औरतें हमेशा रखती थीं।

खुशी का दिन आया, ललिता ने आठ पाउंड के प्यारे-से सुन्दर बेटे को जन्म दिया। बाजे बजे, पूरे मोहल्ले में मोतीचूर के लड्डू बँटवाए, किन्नर भी बधाइयाँ देने आये, खुशियाँ ही खुशियाँ छा गईं। विजय की माँ तो अब पूरे शहर में फूली-फूली फिर रही थी और सभी को न्योता दे रही थी अपने पोते के जन्म की दावत का।

बहिनें, बेटियाँ, बुआ, चाची महीनों रहीं अपने विजय के बेटा जो हुआ था। ललिता ने भी सभी को भरपूर मान-दान दिया, कोई कसर नहीं छोड़ी, वर्षों की तमन्ना जो पूरी हुई थी।

फिर ललिता और विजय दोनों ज्योतिषियों, पंडितों, महंतों के चक्कर काटने लगे, बेटे के नामकरण के लिए, बढ़िया से बढ़िया नाम रखने के चक्कर में। आखिरकार नाम फाइनल ही नहीं हो सका, पर कुछ तो बुलाना ही था। माँ-बाप ने खेल-खेल में 'राजा बेटा' बुलाना शुरू कर दिया। धीरे-धीरे पड़ोसियों ने भी राजा बोलना शुरू कर दिया और वह राजा ही हो गया। अच्छा रहा जो दो-चार नाम नहीं पड़े।

किलकारियों से आँगन गूँज उठा था। मस्त डील-डौल, प्यारी-सी मुस्कान देखते-देखते दोनों का दिन कब निकल जाता, पता ही नहीं चलता। ललिता और विजय के पास राजा को खिलाने का ही एक प्रोजेक्ट